Causes of the first World War (Part-2)

For U.G. Sem-4, Unit-5

19वीं सदी के अंत में **सामाज्यवादी विस्तार** यूरोप के लिए एक समस्या बन गया। वस्तुत औद्योगिक क्रांति के पश्चात यूरोप के देशों को कच्चा माल प्राप्त करने एवं कल कारखानों में निर्मित वस्तुओं को बेचने हेतु बाजारों की आवश्यकता थी। निरंतर बढ़ती जनसंख्या को बसाने के लिए भी नए देश की आवश्यकता थी, फलतः उन्हें अपनी समस्या का समाधान साम्राज्य बिस्तार में दिखा। चूंकि एशिया और अफ्रीका में यूरोपीय देशों का आधिपत्य पहले ही हो गया था तथा जर्मनी एवं इटली साम्राज्यवादी प्रसार के दौर में देर से शामिल होने के कारण अतृप्त रह गए थे परिणामतः यह देश उन देशों से उपनिवेश छिनना चाहते थे जिन्होंने पहले ही अपना साम्राज्य विस्तार कर लिया था जबकि दूसरे देश यथास्थिति में अपनी आर्थिक हित समझते थे। बाल्कन क्षेत्र में रूस और ऑस्ट्रिया तुर्की के अधिकार को समाप्त कर अपना प्रभुता जमाना चाहते थे। इस कारण ऑस्ट्रिया एवं रूस के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई। इस प्रकार साम्राज्यवादी विस्तार की मंशा ने राष्ट्रों के बीच संघर्षों को आवश्यकभांवी बना दिया।

यूरोप में इस समय कोई **अंतरराष्ट्रीय संस्था नहीं** थी जो पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों के झगड़ों का समाधान करके युद्ध की संभावना को टाल देती। 1899 और 1907 के हेग सम्मेलनों ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किये तथा युद्ध को रोकने के लिए अनेक अंतरराष्ट्रीय नियमों का निर्माण किया परंतु इसके पास नियमों के अनुपालन सुनिश्चित करने संबंधी साधन न थे। गुप्त कूटनीतिक पद्धति के कारण किसी भी राज्य की जनता अथवा प्रतिनिधि सभा को समझौते एवं संधियों की जानकारी नहीं हो पाती थी। इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय संस्था

के अभाव में किसी भी देश पर कोई अंकुश नहीं था और सभी देश इच्छाअनुसार उचित या अनुचित कार्य करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र थे।

<u>प्रेस तथा समाचार पत्रों</u> ने युद्ध का वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रवादी उन्माद तथा उत्तेजना बढ़ाने में समाचार पत्र प्रमुख भूमिका निभा रहे थे। एक दूसरे राष्ट्र की आलोचना समाचार पत्रों के मुख्य विषय वस्तु बन गए। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कटूतापूर्ण वातावरण का निर्माण हुआ। राष्ट्रवाद के झूठे नारे के प्रभाव में सैनिकों के साथ-साथ आम नागरिक भी एक दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध के लिए तत्पर दिखने लगे थे। बिस्मार्क ने इस संदर्भ में सही टिप्पणी की थी कि 'प्रत्येक देश किसी न किसी समय अपने प्रेस के कारण ही विपत्ति में फंसता है।'

प्रथम विश्व युद्ध के लिए **<u>जर्मन सम्राट विलियम कैसर का हठी एवं महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व सहायक</u>** बना। वह कहता था कि हमारा भविष्य समुद्र पर निर्भर है। उसने जर्मनी को सामुद्रिक शक्ति बनाने का प्रयास किया फलस्वरुप इंग्लैंड की शत्रुता मोल ले ली। उसके नीति थी संपूर्ण विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना। व्यापारिक देश होने के नाते इंग्लैंड युद्ध के पक्ष में नहीं था जिसे विलियम कैसर इंग्लैंड की कायरता समझता था। उसे यह गलत समझ थी कि इंग्लैंड किसी भी कीमत पर युद्ध टालना चाहेगा। इस प्रकार विलियम कैसर के उग्र साम्राजवादी, निरंकुश चरित्र ने यूरोप को महायुद्ध के कगार पर पहुंचा दिया।

पूरा यूरोप बारूद की ढेर पर बैठा था जिसमें **<u>ऑस्ट्रिया का राजकुमार फ्रांसिस फर्डिनेंड एवं उसकी पत्नी की बोस्निया की राजधानी से सेराजेवो में हत्या</u>** ने चिंगारी का काम करते हुए युद्ध का आगाज कर दिया। दरअसल बाल्कन प्रदेश में बोस्निया तथा हर्जेगोविना की समस्या जटिल थी। बर्लिन संधि के तहत ऑस्ट्रिया को इन प्रदेशों का शासन अधिकार मिला था। वह इन प्रदेशों को अपने राज्य में

नहीं मिल सकता था परंतु 1908 में ऑस्ट्रिया ने बर्लिन संधि को भंग कर इन दोनों प्रदेशों को अपने प्रदेश में मिला लिया। सर्बिया इससे आहत हुआ क्योंकि यह दोनों प्रदेश स्लाव नस्ल के थे। सर्बिया स्लाव आंदोलन का अग्रज देश होने के कारण इन पर अपना प्रभुत्व कायम करना चाहता था। बोस्निया के लोगों में सम्राट के प्रति भक्ति भावना उत्पन्न करना राजकुमार फर्डिनेंड की यात्रा का मुख्य उद्देश्य था। फलतः राष्ट्रवादी स्लाव उग्रवादियों ने स्लाव मुक्ति की राह में बाधक ऑस्ट्रिया को आतंकित करने के उद्देश्य से राजकुमार फर्डिनेंड की हत्या का षड्यंत्र रचा और 28 जून 1914 को 'गार्विलो प्रिसिप' नामक व्यक्ति ने सेराजेवो में गोली मारकर हत्या कर दी। ऑस्ट्रिया ने इसे राष्ट्रीय गौरव पर आघात माना एवं बदला लेने के लिए बेचैन हो उठा। यह घटना प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण बना।

ऑस्ट्रिया सर्बिया को कुचल देने का निर्णय लिया एवं युवराज की हत्या के ऐवज में जवाब तलब किया। संतोषजनक उत्तर न मिलने की स्थिति में ऑस्ट्रिया ने 28 जुलाई 1914 को सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। सर्बिया के मदद हेतु रुस ने सैन्यशक्ति के साथ भागीदारी दी, फिर जर्मनी द्वारा विनाशकारी ऑस्ट्रिया का समर्थन दिया गया।जब जर्मनी ने बेल्जियम पर आक्रमण कर दिया तो इंग्लैंड को भी अपनी सुरक्षा पर खतरा दिखाई देने लगा। इंग्लैंड ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जब जर्मनी ने अमेरिकी जहाज को डुबो दिया तब 1917 में अमेरिका भी युद्ध में इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, सर्बिया के पक्ष में हो गया। दूसरी तरफ ऑस्ट्रिया, जर्मनी, बुल्गारिया, तुर्की आदि राष्ट्र थे फलतः यूरोपीय युद्ध ने विनाशकारी विश्व युद्ध का रूप ले लिया जिसका अंत 1918 में हुआ।

Arun Kumar Rai

Asst. professor

P.G. Dept.of History, Maharaja College,Ara.